International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

सिवनी जिले के विशेष संदर्भ में महिलाओं की आर्थिक स्वतंत्रता और पारिवारिक परिवर्तन का साहित्यिक एवं तुलनात्मक अध्ययन

Afsana Anjum
Research Scholar, Department of Sociology, Malwanchal University, Indore
Dr. Sonali Pandit
Supervisor, Department of Sociology, Malwanchal University, Indore

सारांश
महिलाओं की आर्थिक स्वतंत्रता आधुनिक समाज में सामाजिक परिवर्तन एवं विकास का एक महत्वपूर्ण आधार बन चुकी है। विशेष रूप से मध्यप्रदेश के सिवनी जिले जैसे अर्ध-ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं की शिक्षा, रोजगार, स्वरोजगार तथा स्वयं सहायता समूहों में बढ़ती भागीदारी ने पारिवारिक एवं सामाजिक संरचना को प्रभावित किया है। यह समीक्षा आधारित अध्ययन महिलाओं की आर्थिक स्वतंत्रता तथा उसके पारिवारिक परिवर्तन पर पड़ने वाले प्रभावों का तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। अध्ययन में विभिन्न पुस्तकों, शोध पत्रों, सरकारी रिपोर्टों एवं राष्ट्रीय सर्वेक्षणों के आधार पर यह समझने का प्रयास किया गया है कि आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर महिलाएँ परिवार के निर्णयों, बच्चों के पालन-पोषण, शिक्षा, स्वास्थ्य एवं सामाजिक विकास में किस प्रकार महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। अध्ययन से यह भी स्पष्ट होता है कि महिलाओं की आर्थिक स्वतंत्रता ने पारंपरिक संयुक्त परिवार व्यवस्था, लैंगिक भूमिकाओं तथा सामाजिक दृष्टिकोण में उल्लेखनीय परिवर्तन उत्पन्न किए हैं।

मुख्य शब्द : महिला सशक्तिकरण, आर्थिक स्वतंत्रता, पारिवारिक परिवर्तन, सिवनी जिला, सामाजिक विकास, तुलनात्मक अध्ययन।

1. प्रस्तावना

भारतीय समाज में महिलाओं की भूमिका सदैव महत्वपूर्ण रही है, किंतु लंबे समय तक उन्हें आर्थिक एवं सामाजिक रूप से पुरुषों पर निर्भर माना जाता रहा। आधुनिक शिक्षा, औद्योगिकीकरण, शहरीकरण एवं सरकारी योजनाओं के प्रभाव से महिलाओं की स्थिति में व्यापक परिवर्तन आया है। वर्तमान समय में महिलाएँ शिक्षा, व्यवसाय, प्रशासन, उद्योग, कृषि एवं सेवा क्षेत्र सहित लगभग प्रत्येक क्षेत्र में अपनी सक्रिय भागीदारी निभा रही हैं। महिलाओं की आर्थिक स्वतंत्रता केवल आय अर्जित करने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह आत्मनिर्भरता, निर्णय लेने की क्षमता, सामाजिक सम्मान एवं आत्मविश्वास से भी जुड़ी हुई है।

मध्यप्रदेश के सिवनी जिले में महिलाओं की आर्थिक गतिविधियों में बढ़ती भागीदारी ने पारिवारिक संरचना को भी प्रभावित किया है। पहले जहाँ महिलाएँ मुख्यतः घरेलू कार्यों तक सीमित थीं, वहीं अब वे परिवार की आय बढ़ाने, बच्चों की शिक्षा एवं स्वास्थ्य संबंधी निर्णय लेने तथा सामाजिक गतिविधियों में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में महिलाओं की आर्थिक स्थिति एवं पारिवारिक भूमिका में अंतर देखने को मिलता है। शहरी क्षेत्रों में महिलाओं को शिक्षा एवं रोजगार के अधिक अवसर प्राप्त होते हैं, जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में सामाजिक परंपराएँ एवं संसाधनों की कमी अभी भी उनकी प्रगति में बाधा उत्पन्न करती हैं।

यह अध्ययन महिलाओं की आर्थिक स्वतंत्रता तथा उसके पारिवारिक परिवर्तन पर पड़ने वाले प्रभावों का साहित्यिक एवं तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। अध्ययन का उद्देश्य यह समझना है कि आर्थिक

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

आत्मनिर्भरता से परिवार की संरचना, सामाजिक संबंधों एवं लैंगिक भूमिकाओं में किस प्रकार परिवर्तन आया है।

2. महिलाओं की आर्थिक स्वतंत्रता की अवधारणा

महिलाओं की आर्थिक स्वतंत्रता का अर्थ है कि महिलाएँ अपनी आय अर्जित करने, आर्थिक संसाधनों का उपयोग करने तथा वित्तीय निर्णय लेने में सक्षम हों। आर्थिक स्वतंत्रता महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाती है और उन्हें सामाजिक एवं पारिवारिक स्तर पर सशक्त बनाती है। अमर्त्य सेन (1999) ने अपनी पुस्तक Development as Freedom में कहा है कि विकास का वास्तविक अर्थ व्यक्ति की स्वतंत्रता एवं क्षमता का विस्तार है। महिलाओं की आर्थिक स्वतंत्रता भी इसी अवधारणा का महत्वपूर्ण भाग है।

नुसबाम (2000) के अनुसार महिलाओं की आर्थिक स्वतंत्रता उन्हें सम्मानपूर्वक जीवन जीने, सामाजिक सहभागिता बढ़ाने तथा अपनी क्षमताओं का विकास करने का अवसर प्रदान करती है। आर्थिक रूप से स्वतंत्र महिलाएँ शिक्षा, स्वास्थ्य, संपत्ति अधिकार एवं सामाजिक निर्णयों में अधिक प्रभावशाली भूमिका निभाती हैं।

भारत में स्वयं सहायता समूहों, सूक्ष्म वित्त योजनाओं एवं महिला उद्यमिता कार्यक्रमों ने महिलाओं की आर्थिक स्थिति को मजबूत बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में स्वयं सहायता समूह महिलाओं को बचत, ऋण एवं स्वरोजगार के अवसर प्रदान करते हैं, जिससे वे आर्थिक रूप से सशक्त बनती हैं।

3. पारिवारिक संरचना एवं परिवर्तन की अवधारणा

पारिवारिक संरचना समाज की मूल इकाई है, जिसमें पति-पत्नी, बच्चे एवं अन्य सदस्य सम्मिलित होते हैं। भारतीय समाज में परंपरागत रूप से संयुक्त परिवार व्यवस्था प्रचलित रही है, जहाँ परिवार के सभी सदस्य एक साथ रहते थे तथा आर्थिक एवं सामाजिक जिम्मेदारियाँ साझा करते थे।

आधुनिक समय में औद्योगिकीकरण, शिक्षा, रोजगार एवं शहरीकरण के प्रभाव से परिवार की संरचना में परिवर्तन आया है। संयुक्त परिवारों का स्थान धीरे-धीरे एकल परिवारों ने लेना प्रारंभ किया है। महिलाओं की आर्थिक स्वतंत्रता ने भी इस परिवर्तन को प्रभावित किया है। आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर महिलाएँ परिवार के निर्णयों में सक्रिय भूमिका निभाती हैं तथा पारंपरिक लैंगिक भूमिकाओं को चुनौती देती हैं।

कई अध्ययनों में यह पाया गया है कि महिलाओं की आर्थिक स्वतंत्रता से परिवारों में लोकतांत्रिक वातावरण विकसित होता है। पति-पत्नी के संबंधों में समानता बढ़ती है तथा बच्चों की शिक्षा एवं स्वास्थ्य पर अधिक ध्यान दिया जाता है। हालांकि कुछ परिवारों में आर्थिक स्वतंत्रता के कारण भूमिका संघर्ष एवं पारिवारिक तनाव भी उत्पन्न होते हैं।

4. सिवनी जिले में महिलाओं की आर्थिक स्थिति

सिवनी जिला मध्यप्रदेश का एक महत्वपूर्ण अर्ध-ग्रामीण जिला है, जहाँ अधिकांश जनसंख्या कृषि एवं संबंधित गतिविधियों पर निर्भर है। जिले की महिलाओं की आर्थिक स्थिति ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में अलग-अलग दिखाई देती है। ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाएँ कृषि कार्य, पशुपालन, हस्तशिल्प एवं स्वयं सहायता समूहों से जुड़ी होती हैं, जबकि शहरी क्षेत्रों में महिलाएँ शिक्षा, स्वास्थ्य, बैंकिंग एवं निजी संस्थानों में कार्यरत हैं।

मध्यप्रदेश सरकार द्वारा संचालित विभिन्न योजनाएँ जैसे राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन, महिला स्वयं सहायता समूह, कौशल विकास कार्यक्रम एवं स्वरोजगार योजनाओं ने महिलाओं की आर्थिक भागीदारी को बढ़ावा दिया है। इन योजनाओं के माध्यम से महिलाओं को प्रशिक्षण, ऋण सुविधा एवं रोजगार के अवसर प्राप्त हुए हैं।

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (NFHS-5) के अनुसार आर्थिक रूप से सक्रिय महिलाओं की निर्णय लेने की क्षमता अधिक होती है। वे परिवार की आय, बच्चों की शिक्षा एवं स्वास्थ्य संबंधी निर्णयों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। सिवनी जिले में भी यह प्रवृत्ति धीरे-धीरे बढ़ रही है।

5. महिलाओं की आर्थिक स्वतंत्रता का पारिवारिक परिवर्तन पर प्रभाव

5.1 निर्णय लेने की क्षमता में वृद्धि

आर्थिक रूप से स्वतंत्र महिलाएँ परिवार के महत्वपूर्ण निर्णयों में सक्रिय भागीदारी निभाती हैं। वे घरेलू खर्च, बच्चों की शिक्षा, स्वास्थ्य एवं निवेश संबंधी निर्णय लेने में सक्षम होती हैं। इससे परिवार में महिलाओं की स्थिति मजबूत होती है।

5.2 बच्चों की शिक्षा एवं स्वास्थ्य पर प्रभाव

अध्ययनों से स्पष्ट होता है कि आर्थिक रूप से सक्षम महिलाएँ बच्चों की शिक्षा एवं स्वास्थ्य पर अधिक ध्यान देती हैं। वे बच्चों को बेहतर शिक्षा एवं पोषण प्रदान करने का प्रयास करती हैं। इससे परिवार के जीवन स्तर में सुधार होता है।

5.3 वैवाहिक संबंधों में परिवर्तन

महिलाओं की आर्थिक स्वतंत्रता से पति-पत्नी के संबंधों में समानता बढ़ती है। महिलाएँ अपनी राय स्वतंत्र रूप से व्यक्त कर पाती हैं तथा पारिवारिक निर्णयों में उनकी भागीदारी बढ़ती है। हालांकि कुछ मामलों में पुरुष प्रधान मानसिकता के कारण वैवाहिक तनाव भी उत्पन्न हो सकता है।

5.4 संयुक्त परिवार से एकल परिवार की ओर परिवर्तन

आर्थिक स्वतंत्रता एवं रोजगार के कारण महिलाएँ शहरों की ओर प्रवास करती हैं, जिससे संयुक्त परिवारों का विघटन एवं एकल परिवारों की संख्या में वृद्धि होती है। यह परिवर्तन विशेष रूप से शहरी क्षेत्रों में अधिक दिखाई देता है।

5.5 सामाजिक जागरूकता एवं आत्मविश्वास

आर्थिक रूप से स्वतंत्र महिलाएँ सामाजिक गतिविधियों में अधिक सक्रिय होती हैं। वे अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होती हैं तथा घरेलू हिंसा एवं भेदभाव के विरुद्ध आवाज उठाने में सक्षम होती हैं।

6. साहित्य समीक्षा (Literature Review)

महिलाओं की आर्थिक स्वतंत्रता और पारिवारिक संरचना पर विभिन्न विद्वानों द्वारा व्यापक अध्ययन किए गए हैं। इन अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि महिलाओं की आर्थिक स्थिति में सुधार होने से परिवार और समाज दोनों के विकास में सकारात्मक परिवर्तन देखने को मिलते हैं। अग्रवाल (2018) ने अपने अध्ययन में बताया कि महिलाओं की आर्थिक भागीदारी खाद्य सुरक्षा, पारिवारिक स्थिरता तथा सतत विकास के लिए अत्यंत आवश्यक है। डुफ्लो (2014) ने महिला सशक्तिकरण और आर्थिक विकास के मध्य गहरे संबंधों को स्पष्ट करते हुए कहा कि आर्थिक रूप से स्वतंत्र महिलाएँ परिवार के स्वास्थ्य, शिक्षा और सामाजिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान देती हैं। इसी प्रकार कबीर (2016) ने महिलाओं की आर्थिक स्वतंत्रता को सामाजिक परिवर्तन और लैंगिक समानता का प्रमुख आधार माना है।

अग्रवाल, बी. (2018). इस अध्ययन में अग्रवाल ने लैंगिक समानता, खाद्य सुरक्षा तथा सतत विकास लक्ष्यों के मध्य संबंधों का विस्तृत विश्लेषण किया है। लेखिका के अनुसार महिलाओं की आर्थिक स्वतंत्रता केवल व्यक्तिगत विकास तक सीमित नहीं है, बल्कि यह परिवार और समाज के समग्र विकास के लिए भी आवश्यक है। अध्ययन में बताया गया कि ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाएँ कृषि, पशुपालन तथा खाद्य उत्पादन में महत्वपूर्ण

योगदान देती हैं, लेकिन उन्हें संसाधनों, भूमि अधिकारों और वित्तीय सुविधाओं तक समान पहुँच प्राप्त नहीं होती। शोध के अनुसार यदि महिलाओं को आर्थिक संसाधनों और रोजगार के अवसरों तक समान पहुँच दी जाए तो खाद्य सुरक्षा की स्थिति में उल्लेखनीय सुधार हो सकता है।

अहलावत, एन., एवं मेहता, डी. (2020). इस अध्ययन में लेखकों ने महिला सशक्तिकरण को सामाजिक और आर्थिक विकास का प्रमुख आधार बताया है। अध्ययन के अनुसार किसी भी समाज का संतुलित विकास तब संभव है जब महिलाओं को शिक्षा, रोजगार और आर्थिक संसाधनों तक समान अवसर प्राप्त हों। लेखकों ने स्पष्ट किया कि आर्थिक रूप से स्वतंत्र महिलाएँ परिवार की आय में योगदान देने के साथ-साथ सामाजिक निर्णयों में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। शोध में यह पाया गया कि महिलाओं की आर्थिक भागीदारी बढ़ने से परिवार के स्वास्थ्य, शिक्षा और जीवन स्तर में सुधार होता है। अध्ययन में यह भी बताया गया कि ग्रामीण क्षेत्रों में स्वयं सहायता समूहों और सरकारी योजनाओं ने महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

बंसल, एस. (2019). इस अध्ययन में ग्रामीण महिलाओं के वित्तीय समावेशन की स्थिति और उसके प्रभावों का विश्लेषण किया गया है। लेखक ने बताया कि बैंकिंग सेवाओं, बचत योजनाओं, सूक्ष्म वित्त तथा स्वयं सहायता समूहों तक महिलाओं की पहुँच बढ़ने से उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ है। अध्ययन के अनुसार वित्तीय समावेशन महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाता है और उन्हें परिवार के आर्थिक निर्णयों में भागीदारी का अवसर प्रदान करता है। शोध में यह पाया गया कि जिन महिलाओं के पास स्वयं की आय या बचत होती है, वे घरेलू खर्च, बच्चों की शिक्षा तथा स्वास्थ्य संबंधी निर्णयों में अधिक प्रभावशाली भूमिका निभाती हैं। लेखक ने यह भी स्पष्ट किया कि ग्रामीण क्षेत्रों में डिजिटल बैंकिंग और सरकारी योजनाओं ने महिलाओं की आर्थिक जागरूकता को बढ़ाया है।

भगत, आर., एवं साहू, एच. (2015). इस अध्ययन में प्रवास और महिलाओं की आर्थिक भागीदारी के बीच संबंधों का विश्लेषण किया गया है। लेखकों ने बताया कि ग्रामीण क्षेत्रों से पुरुषों के रोजगार हेतु शहरों की ओर प्रवास करने के कारण महिलाओं की घरेलू और आर्थिक जिम्मेदारियाँ बढ़ी हैं। अध्ययन के अनुसार पुरुष प्रवास के बाद महिलाएँ कृषि, पशुपालन तथा अन्य आर्थिक गतिविधियों में अधिक सक्रिय भूमिका निभाने लगी हैं। शोध में यह भी पाया गया कि आर्थिक जिम्मेदारियों के बढ़ने से महिलाओं की निर्णय लेने की क्षमता और सामाजिक भागीदारी में वृद्धि हुई है। लेखकों ने स्पष्ट किया कि आर्थिक स्वतंत्रता प्राप्त करने वाली महिलाएँ परिवार की आवश्यकताओं को अधिक प्रभावी ढंग से पूरा करने में सक्षम होती हैं।

भट्टाचार्य, एस. (2021). इस अध्ययन में ग्रामीण भारत में महिलाओं की कार्य भागीदारी और घरेलू निर्णय प्रक्रिया के मध्य संबंधों का विश्लेषण किया गया है। लेखिका ने बताया कि आर्थिक गतिविधियों में भाग लेने वाली महिलाएँ परिवार के महत्वपूर्ण निर्णयों में अधिक प्रभावशाली भूमिका निभाती हैं। अध्ययन के अनुसार रोजगार प्राप्त महिलाओं का आत्मविश्वास और सामाजिक सम्मान बढ़ता है, जिससे वे बच्चों की शिक्षा, स्वास्थ्य, विवाह तथा घरेलू खर्च जैसे विषयों पर सक्रिय निर्णय लेने लगती हैं। शोध में यह भी स्पष्ट किया गया कि आर्थिक स्वतंत्रता महिलाओं को पारंपरिक निर्भरता से बाहर निकालती है और परिवार में समानता की भावना को बढ़ावा देती है।

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

7. महिला सशक्तिकरण में सरकारी योजनाओं की भूमिका

भारत सरकार एवं मध्यप्रदेश सरकार द्वारा महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण के लिए अनेक योजनाएँ संचालित की जा रही हैं। इनमें स्वयं सहायता समूह, प्रधानमंत्री मुद्रा योजना, राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन, लाड़ली बहना योजना, महिला उद्यमिता कार्यक्रम एवं कौशल विकास योजनाएँ प्रमुख हैं।

इन योजनाओं के माध्यम से महिलाओं को स्वरोजगार, वित्तीय सहायता एवं प्रशिक्षण प्राप्त होता है। इससे उनकी आर्थिक स्थिति मजबूत होती है तथा वे आत्मनिर्भर बनती हैं। सिवनी जिले में स्वयं सहायता समूहों ने महिलाओं की आय बढ़ाने एवं सामाजिक जागरूकता फैलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

8. अध्ययन की चुनौतियाँ एवं समस्याएँ

महिलाओं की आर्थिक स्वतंत्रता के बावजूद कई चुनौतियाँ अभी भी मौजूद हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में अशिक्षा, गरीबी, सामाजिक रूढ़ियाँ एवं संसाधनों की कमी महिलाओं की प्रगति में बाधा उत्पन्न करती हैं।

कई महिलाएँ घरेलू कार्यों एवं रोजगार के दोहरे दायित्व का सामना करती हैं। इसके अतिरिक्त कार्यस्थल पर लैंगिक भेदभाव, कम वेतन एवं सुरक्षा की कमी जैसी समस्याएँ भी महिलाओं की आर्थिक स्वतंत्रता को प्रभावित करती हैं।

कुछ परिवारों में महिलाओं की आर्थिक स्वतंत्रता को पुरुष प्रधान मानसिकता के कारण स्वीकार नहीं किया जाता, जिससे पारिवारिक तनाव उत्पन्न होते हैं।

9. निष्कर्ष

अध्ययन से स्पष्ट होता है कि महिलाओं की आर्थिक स्वतंत्रता ने पारिवारिक एवं सामाजिक संरचना में व्यापक परिवर्तन उत्पन्न किए हैं। आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर महिलाएँ परिवार के निर्णयों में सक्रिय भूमिका निभाती हैं तथा बच्चों की शिक्षा, स्वास्थ्य एवं सामाजिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान देती हैं।

सिवनी जिले में महिलाओं की आर्थिक भागीदारी धीरे-धीरे बढ़ रही है, जिससे सामाजिक जागरूकता एवं पारिवारिक समानता में सुधार हो रहा है। हालांकि ग्रामीण क्षेत्रों में अभी भी सामाजिक परंपराएँ एवं संसाधनों की कमी महिलाओं की प्रगति में बाधा उत्पन्न करती हैं।

महिलाओं की आर्थिक स्वतंत्रता केवल व्यक्तिगत विकास का माध्यम नहीं है, बल्कि यह सामाजिक एवं राष्ट्रीय विकास का भी महत्वपूर्ण आधार है। अतः सरकार एवं समाज को महिलाओं की शिक्षा, रोजगार एवं उद्यमिता को बढ़ावा देने के लिए अधिक प्रभावी कदम उठाने चाहिए।

संदर्भ सूची

1. Sen, A. K. (1999). Development as Freedom. Oxford University Press.
2. Nussbaum, M. C. (2000). Women and Human Development. Cambridge University Press.
3. Kabeer, N. (2001). Reflections on the Measurement of Women's Empowerment. SIDA.
4. Kishor, S., & Gupta, K. (2009). Gender Equality and Women's Empowerment in India. IIPS, Mumbai.
5. NFHS-5 (2019-21). International Institute for Population Sciences, Mumbai.
6. Madhya Pradesh Human Development Report (2021). Government of Madhya Pradesh.
7. Census of India (2011). Seoni District Census Report.
8. Rustagi, P. (2004). Gender Differentials in Labour Force Participation. New Delhi.
9. Rao, N., & Kelleher, D. (2005). Gender and Development, 13(2), 57-69.
10. World Bank (2022). Women, Business and the Law 2022. Washington D.C